चतुर्थ अध्याय
यशपाल की कहानियों में
नारी चित्रण

यशपाल के आजतक कुल १७ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें कुल मिलाकर १०० कहानियाँ संग्रहित हैं। समय-समय पर प्रकाशित और असंग्रहित कहानियों को मिलाकर वे २२५ से अधिक होती हैं। इन कहानियों में से आधी से जादा कहानियाँ नारी, नारी समस्या, नारी स्वातंत्र्य को लेकर लिखी गयी हैं। इसी कारण यशपाल के प्रकाशित कहानी संग्रह में इसका चित्रण किस प्रकार हुआ इसकी चर्चा हम आगे करेंगे।

१) पिंजरे की उड़ान (१९३९)

यशपाल के इस प्रथम कहानी संग्रह क में बीस कहानियाँ संग्रहित हैं। इनमें से ९ कहानियाँ नारी जीवन से संबंधित हैं। लेखक ने आर्थिक, सामाजिक विषमता के साथ नारी जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण किया है। ` नीरस रसिक ` कहानी में सविता द्वारा ` मॉडिल गर्ल ` के निरावरण चित्रण पर आपत्ति उठाना दिखाकर उन्होंने इस प्रश्न की ओर

और हमारा ध्यान आकर्षित किया है। उनके शब्दों में, `यदि संगीतज्ञ अपने गले के माधुर्य से कुछ कमा ले या चित्रकार अपनी उँगलियों की कला से कुछ अर्जन करे, या पहलवान अपनी शारीरिक शक्ति से इनाम पाने की चेष्टा करे तो उसमें कुछ भी बुरा नहीं, निंदा का कोई कारण नहीं लेकिन रूपवती यदि अपने रूप के प्रभाव से कुछ पा जाए तो वह महापाप है.....क्यों ?`[१] इस प्रश्न के द्वारा लेखक ने समाज की पारंपारिक धारणा, थोती नैतिकता पर प्रहार कर स्पष्ट करना चाहा है कि, हर सौंदर्य का सृष्टि में प्रयोजन होता है। प्रयोजन से सौंदर्य को वंचित रखना अप्राकृतिक है। सृष्टि का सौंदर्य ही उसके जीवन की स्फूर्ति है।

`समाजसेवा` कहानी में लेखक ने समाज की अभिजात महिलाओं द्वारा समाजसेवा के व्रत को निभाने में व्रत की अपेक्षा फैशनपरस्ती का मोह कैसे प्रमुख होता है, उसकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। भद्र महिलाएँ क्लबों, सोसाइटियों में जाकर किस ढंग से समाजसेवा करती है, इसका भी व्यंग्यात्मक चित्रण किया है।

पुरुष द्वारा स्त्री पर किये जानेवाले अत्याचारों की कथा `प्रेमसार` कहानी में है। इस कहानी में प्रतीक्षा, साहचार्य की भावना, मिलनाकांक्षा एवं संतोनोत्पत्ति की लालसा जैसी नारी की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति का बड़ा ही मनोवैज्ञानिक एवं सूक्ष्म चित्रण किया है। साथ ही नारी की पातिव्रत्य भावना को मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। `दुखी-दुखी` कहानी में नारी आर्थिक विपन्नता के कारण किस प्रकार वेश्या बनने के लिए विवश होती है, इसका संकेत दिया है। `शर्त` कहानी में पुरुष वर्ग का नारी की ओर देखने का स्वार्थी और संकुचित दृष्टिकोण स्पष्ट हुआ है। किसी स्त्री का किसी पुरुष के प्रति होनेवाला झुकाव प्राकृतिक होकर भी लोग उसे अनैतिक मानकर चुडैल की संज्ञा देते हैं। पर ऐसे ही किसी स्त्री का

झुकाव अपनी तरफ होने का पता चलने पर उसे वे स्वाभाविक एवं नैतिक मानते हैं। `तिसरी चिता` कहानी में पत्नी के असती होने का पता चलने पर पुरुषमन पर होने वाले आघात को चित्रित किया है। `प्रायश्चित` कहानी के द्वारा ब्रह्मचर्य की अनुचितता को स्पष्ट करने की चेष्टा की है। कामभावना स्त्री-पुरुष की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उसका दमन करना, कराना नारी की आत्मा पर जघन्य अन्याय करता है। `पराई` कहानी रक्सी और पूरन की प्रेमकथा है। पुरुष प्रधान समाज में नारी के मन तथा इच्छाओं की कोई कीमत नहीं होती। वह पुरुष की दासी मात्र है। जिंदगी भर डाँट-फटकार, अपमान सहना उसके भाग्य में होता है। रक्सी के द्वारा लेखक ने नारी की पराधीनता की समस्या को उठाया है। `दर्पण` कहानी में स्त्री की मानसिक अवस्था का चित्रण है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, `पिंजरे कीउडान` की कहानियाँ समस्या प्रधान हैं। `प्रेम कासार,` `तीसरी चिता,` `दुखी-दुखी,` `प्रायश्चित,` `दर्पण,` और `पराई` जैसी कहानियों में नारी के उत्पीडन को चित्रित किया है।

२) वो दुनिया (१९४१)

इसमें १२ कहानियाँ संगृहित है। जीवन की विविध समस्याओं का उद्घाटन करना इनका उद्देश्य है। कुल मिलाकर चार कहानियाँ नारी जीवन से संबंधित हैं। `दूसरी नाक` कहानी में पुरुष का स्त्री जाति पर होनेवाले निरंकुश सत्ता का यथार्थ चित्रण है। पुरुष नारी को उसके सौंदर्य और दिल तक को अपनी वैयक्तिक संपत्ति मानता है। पुरुष के दंभ के आगे स्त्री की कोई नाक नहीं होती। वह पुरुष की लौंडी मात्र है। इस वास्तविकता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। `मोटरवाली -

कोयलेवाली ` कहानी आर्थिक परिपार्श्व पर चित्रित नारी के प्रेम की कहानी है। कोयलेवाली के चित्रण के द्वारा निर्धन औरतों की अमानवीय दशा को चित्रित किया है। ` शिकायत ` कहानी में नारी की मानसिक दशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण है। स्त्री-पुरुष के पारस्परिक आकर्षण को सहज प्रवृत्ति के रूप में चित्रित किया है। ` जहाँ हसद नहीं ` कहानी एक ओर पुरुष के हसद ईर्ष्या की कहानी है तो दूसरी ओर नारी की पराधीनता की।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, ` दो मुंह की बात,` ` दूसरी नाक,`` मोटरवाली-कोयलेवाली ` तथा ` जहाँ हसद नहीं ` आदि कहानियाँ एक ओर नारी की दुरावस्था को अवगत कराती है, वही दूसरी ओर पुरुष एकाधिकार की प्रवृत्ति पर प्रहार करती है।

३) तर्क का तूफान (१९४३)

यशपाल के इस तीसरे कहानी संग्रह में कुछ मिलाकर १६ कहानियाँ संग्रहित हैं, जिनमें ९ कहानियों में नारी जीवन को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। ` निर्वासिता ` कहानी में इंदु नामक सुशिक्षिता के चरित्र को उभारा है। उसके चरित्र के द्वारा नारी सेक्स की समस्या को चित्रित किया है। इन्दु का आचरण दमित वासना से आक्रांत नारी का आचरण है, जिसमें मानसिक संतुलन नहीं के बराबर है। ` तर्क का तूफान ` एक प्रेमकथा है तथा ` मेरी जीत ` कहानी में नारी की पुरुषाधिनता का चित्रण किया है। पति की इच्छा के आगे पत्नी को अपने निजी शौक, इच्छाएँ सभी कुछ न्योछावर करने पडते हैं। पुरुष सत्ताप्रधान इस समाज व्यवस्था में नारी दिन बिताती है, सब इच्छाओं का दमन कर पति का सुख ही उसका सुख होता है, ऐसी व्यवस्था में नारी के अलग अस्तित्व पर निरंतर पुरुष का अंकुश बना रहता है। इस

प्रवृत्ति पर व्यंग्य करना एवं पुरुषों की दासता की श्रृंखला से नारी को मुक्त करना इस कहानी का उद्देश्य है। ` डायन ` कहानी में धार्मिक, सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों के कारण नारी की जो दयनीय अवस्था होती है उसका चित्रण है। नारी को पुरुष की आवश्यकता होती है, जीवन के प्रबल आधार के रूप में न कि शरीर से यौनरस चूसनेवाले लालायित मधुपों की। ` सोमा का साहस ` कहानी में नारी के प्रगतिशील एवं साहसी होने पर समाज द्वारा उठाये जानेवाली आपत्ति का चित्रण है। ` होली नहीं खेलता ` स्त्री-पुरुष के त्रिकोणात्मक संबंध की कथा है। ` जादू के चावल ` के माध्यम से लेखक ने ` सेक्स ` के प्रति पाश्चात्य और भारतीय दृष्टिकोण का उद्घाटन कर नैतिकता के झूठे बंधनों में अपने ही ऐ पैरों पर कुल्हाड़ी मार लेने वाली भारतीय नारी की स्थिति का चित्र खींचा है। ` औरत ` कथा नारी के अनमेल विवाह की समस्या को चित्रित करती है। ` भाषा ` कहानी में प्रेम का भावविभोर वर्णन है। ` उतरा नशा ` कहानी में निर्मला के रूप में लेखक ने अत्याचार पीड़ित नारी की वेदनाओं को अभिव्यक्त किया है।

यशपाल ने अनमेल विवाह, सेक्स, नारी की पुरुष पराधीनता, जर्जर रूढ़ियों और विषमता को इस संग्रह में चित्रित किया है। ` निर्वासिता,` ` तर्क का तूफान,` ` मेरी जीत,`` डायन,`` शोभा का साहस,` ` जादू के चावल,`` औरत आदि कथाओं व द्वारा नारी की विभिन्न समस्याओं का उद्घाटन किया है। इस संग्रह में नारी समस्याओं को ही अधिकतर चित्रित किया गया है, जिसके कारण इसे हम नारी-समस्या प्रधान संग्रह कह सकते है। स्त्री-पुरुष के यौन संबंधों की चर्चा में पुरुष की आवश्यकता का समर्थन ` निर्वासिता ` कहानी में किया है, तो दूसरी ओर स्त्री की आवश्यकता का प्रतिपादन ` उतरा नशा,`` होली नहीं खेलता ` कहानियों में चित्रित है।

४) ज्ञानदान (१९४३)

यशपाल जी के इस चौथे कहानी संग्रह में १३ कहानियाँ संग्रहित हैं। उनमें से सात कहानियाँ नारी जीवन से संबंधित हैं। ` कुछ समझ न सका ` कहानी प्रेम के त्रिकोणात्मक संबंध के द्वारा आज के समाज में नारी के स्थान को निर्धारित करती है। वर्तमान समाज व्यवस्था में नारी पुरुषों की दया पर जीनेवाली, पुरुषों के अत्याचारों को सहनेवाली दासी मात्र है। उसका पुरुष को छोड़कर कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं है। इस तथ्य को लेखक ने सुजाता के माध्यमक से प्रस्तुत किया है। ` गंडिरी ` प्रतीक है नारी का। मुजरा करनेवाली नारी जो बूढ़ी, दीणकाय है, चूसी गंडिरी की तरह। लोक गंडिरी में जब तक रस रहता है उसे चुसते रहते हैं और रस खत्म होने पर उसे थूक देते हैं। समाजद्वारा बनायी गयी नारी की इस स्थिति को लेखक ने मुजरा कर जीवन यापन करनेवाली बाईजी से उद्घाटित किया है। ` पराया सुख ` कहानी में आर्थिक अभाव से ग्रस्त परवश बनी नारी की कहानी है। आर्थिक गुलामी के कारण मनुष्य अपनी परतंत्रता खो बैठता है। उर्मिला का चरित्र हमें यही बताता है। ` जबरदस्ती ` कहानी में नारी की कुंठाओं का व्यक्तिगत चित्रण है। सुनंदा के द्वारा नारी मन की सहज इच्छाओं को प्रस्तुत किया है। नारी की इच्छा और सामाजिक बंधन का संघर्ष दिखाकर सामाजिक बंधनों के आगे नारी को परवश दिखाया है। ` हलाल का टुकड़ा ` एक ऐसी वेश्या की कथा है, जो हलाल के टुकड़ों पर जीती है, हराम के नहीं। ` मनुष्य ` स्त्री-पुरुष के यौन संबंधों की कथा है। यौन संबंधों के बारे में समाज की नीति-अनीति, भद्र-अभद्र की कल्पना को लेखक गौण मान यौन संबंधों को प्राकृतिक रूप में पेश करता है। यौन-संबंध और सामाजिक कल्पनाओं के संघर्ष को चित्रण करना ही लेखक का

लक्ष्य है । `अपनी चीज` कहानी पुरूष द्वारा स्त्री को निजी संपत्ति मानने की प्रवृत्ति पर प्रहार करने के उद्देश्य से लिखी नारी पराधीनता की कहानी है । पुरूष वर्ग की संकीर्णता की शिकार बन कर नारी को जिंदगी भर घुल-घुल कर मर जाना पडता है । फिर भी उसकी इच्छा का आदर इस पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में कभी नहीं होता ।

प्रस्तुत संघर्ष में लेखक ने नारी की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला है, तथा साथ हीउसके स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा की है । `ज्ञानदान,`` मनुष्य,`` अस्सी बटा सौ ` ये कहानियाँ यौन प्रश्न को उठाती है और उसे प्राकृतिक सिध्द करती हुयी नैतिकता, भद्रता जैसे कृत्रिम बंधनों से मुक्ति की राह दिखाती है । `गंडेरी,`` कुछ समझ न सका,` `पराया सुख,`` जबरदस्ती,`` हलाल का टुकडा,`` अपनी चीज ` आदि कहानियों में नारी की पुरूषाधिनता, कुण्ठा, प्रेम, विवाह की समस्याओं का चित्रण है । `हलाल का टुकडा,` की फुलिया,` गंडेरी ` की बाईजी जैसे नारी पात्र सशक्त के रूप में चित्रित हुए हैं ।

५) <u>अभिशाप्त</u> (१९४४)

यशपाल के इस पांचवे कहानी संग्रह में सोलह कहानियाँ संग्रहित हैं । `समाधि की धूल ` आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी प्रेम-कथा है । शादी के पहले पत्नी किसी से प्यार करती थी । पत्नी के मुख से इसकी स्वीकृति होने पर पति सदा के लिए उससे मुँह फेर लेता है । नारी को समाधि की धूल मात्र बनानेवाली पुरूष नीति पर मार्मिक व्यंग्य कसा गया है । स्त्री दासता की शोकांतिका `छलिया नारी ` कहानी में हैं । पुरूषों द्वारा किये जानेवाले अत्याचारों को सहने की अपेक्षा नारी मृत्यु को स्वीकारना पसंद करती है । पुरूष की अकर्मण्य प्रवृत्ति के कारण नारी को किस प्रकार वेश्या वृत्ति को

LIBRARY KOLHAPUR

स्वीकारना पडता है इसका वर्णन ` रिजक ` कहानी में है। ` रिजक ` था रोजी, जीविका के रूप में नारी को शरीर बेचने के लिए बाध्य करनेवाली समाज व्यवस्था के प्रति लेखक ने तीव्र विरोध प्रकट किया है। ` पुनिया की होली ` कहानी में नारी को मजबूरन पथभ्रष्ट करनेवाली विषमता पर कडा प्रहार किया है।

प्रस्तुत संग्रह में यशपाल ने नारी की विभिन्न समस्याओं का उद्‌घाटन किया है। विषमता की शिकार बनी नारी की विवशता को ` समाधि की धूल,`` छलिया नारी,`` रिजक ` आदिक कहानियों में प्रबल स्वर मिला है।

६) भस्मावृत चिनगारी (१९४६)

यशपाल के इस छठे कहानी संग्रह में पंद्रह कहानियाँ संग्रहित हैं। ` गवाही ` कहानी में नारी पर पुरुष के एकाधिकार की प्रवृत्ति का अंकन किया है। पुरुष अपनी मर्जी के अनुसार जैसा चाहे वैसा जी सकता है, पर वही व्यवहार पत्नी करे तो वह उसे अनुचित मानता है। पुरुषों की इसी मनोवृति का चित्रण करना और नारी की मानसिक तथा शारीरिक गुलामी की ओर संकेत करना लेखक का उद्देश्य है। ` भाग्यचक्र ` कहानी में अमला और नंदसिंह के प्रेमवर्णन के द्वारा नारी को पथभ्रष्ट करनेवाली समाज व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है। वृद्ध विवाह की समस्या को ` पुरुष भगवान ` कहानी में चित्रित किया है। इस अनमेल विवाह के कारण नारी अपनी यौनेच्छा पूरी करने के लिए अन्य व्यक्ति की सहायता लेती है। लेखक इसे असामाजिक नहीं कहता। ` सआदत ` कहानी नारी और सौंदर्य को मनुष्य परंपरा के समान शाश्वत सिध्द करनेवाली प्रेमकथा है। उसके विचारों में नारी का सौंदर्य उसके व्यक्तित्व की भाँति नश्वर नहीं। वह मनुष्य की परंपरा के समान शाश्वत है। जैसे फूल के बीच से फूल पैदा होता

रहता है। प्राचीन काल की सती प्रथा का बडा ही हृदयद्रावक दर्शन ' पहाड का फूल ' कहानी में हुआ है। गुजरी का बुर्ज की अध्यापिका के माध्यम से लेखक ने सती प्रथा की विभीषिका को प्रकट किया है।

७) फूलों का कुरता (१९४६)

इस संग्रह की आठ कहानियों में से अधिकतर कहानियाँ स्त्री-पुरूष के यौन संबंधों पर लिखी गयी हैं। पहाडी प्रदेश में प्रचलित एक कुरीति पर ' आतिथ्य ' कहानी आधारित है। अतिथि का आतिथ्य करने के लिए घर की युवा वधू को अतिथि के साथ रात काटने के लिए भेजने की परंपरागत प्रथा कितनी अनैतिक है इसकी ओर लेखक ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है। ' शिव-पार्वती ' कथा कलाकारों के जीवन पर आधारित प्रेम-कथा है। इस कथा के माध्यम से लेखक ने नर-नारी को परस्परावलंबित चित्रित कर मनुष्य की रूढिग्रस्त मनोधारणा पर आघात किया है। यौन समस्या का चित्रण, ' प्रतिष्ठा का बोझ ' कहानी में चित्रित है। ' धर्मरक्षा ' कहानी में लेखक ने पिता का पुत्री से यौनाकर्षण दिखाकर कामवासना के दमन के दुष्परिणाम की ओर संकेत किया है। ' जिम्मेदारी ' कहानी स्त्री-पुरूष के प्रेम-संबंधों की कहानी है, जिसमें लेखक ने नारी की मातृत्व इच्छा को मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ प्रेम और यौन संबंधों की समस्या पर आधारित हैं। ' धर्मरक्षा ' एवं ' प्रतिष्ठा का बोझ ' में लेखक ने यौनेच्छा को मानवी-संबंधी-रिश्तों से युक्त दिखाकर नैतिकता की धारणा पर ही प्रहार किया है।

८) धर्मयुध्द (१९५०)

यशपाल के इस आंठवे कहानी संग्रह में दस कहानियाँ संग्रहित हैं। ` मतिराम की बहादुरी ` कहानी एक और प्रेम कथा है तो दूसरी और आत्मसम्मान और अधिकार के प्रश्न की चर्चा करनेवाली प्रगतीशील कथा है। ` आत्मिक प्रेमकथा ` कलाकार की प्रेम कथा है। इस कहानी में लेखक ने प्रेम में शरीर दो होने पर भी प्राण एक होने की धारणा को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। ` मंगला ` कहानी सामाजिक व्यवस्था और कानून में पीसी जानेवाली नारी समस्या का उद्घाटन करती है। मंगला शादी के बाद अपने आपको नारकीय पतन से बचाने के हेतु शोख्या, नजीर, गुलाम आदि कई पुरुषों का सहारा लेती है, पर समाज की रुढियों और कानून की कठरता की शिकार बनकर बेसहारा, अनाथ ही बनी रहती है। मंगला की करुण कथा के द्वारा लेखक ने समाज एवं कानून के खोखले पन पर प्रहार किया है।

९) उत्तराधिकारी (१९५१)

पहाडी जीवन की ये रोमांचक कहानियाँ प्रेम, सेक्स, रुढियाँ तथा विभिन्न सांप्रदायिक समस्याओं पर प्रकाश डालती है। ` अगर हो जाता ` कहानी में नारी की मातृत्व भावना का वर्णन किया है। ` जीत की हार ` सांप्रदायिक वातावरण की पृष्ठभूमि पर लिखित प्रेम-कहानी है। नाजू एक भोली-भाली नारी है जो प्रेम को ही धर्म मानकर जीती है। पति द्वारा अपमान सहने के बाद भी वह अपने पतिव्रत धर्म को निभाती है। नाजू का यह सशक्त चरित्र एक और नारी पर होनेवाले अत्याचारों को स्वर देता है तो दूसरी और उसकी उदारता और सहिष्णुता का भी परिचय देता है।

१०) <u>चित्र का शीर्षक</u>

यशपाल के इस दसवे कहानी संग्रह में छोटी-मोटी तेरह समस्या-मूलक कहानियाँ संग्रहित हैं। `आदमी और पैसा` कहानी में आर्थिक अभाव के कारण मनुष्य कहा तक गिर जाता है इसका वर्णन है। इारना आर्थिक अभाव के कारण वेश्या बनती है। राम से वह स्पष्ट शब्दों में कहती है, `पेट भरना है तो टका चाहिए। टके के लिए करती हूँ, नहीं तो तुम टका क्यों दो ?`[२] यही सिध्द करता है। इारना का यह वक्तव्य, `आदमी साथ नहीं सोता उसका पैसा साथ सोता है।`[३] आज की आर्थिक महत्ता को स्पष्ट करता है। `मार का मोल` कहानी में नारी की पराधीनता का भेद खोल दिया है। विवाहित नारी और वेश्या नारी के चित्रण द्वारा स्वाधीनता और पराधीनता की चर्चा की है। `एक सिगरेट` कहानी में यशपाल ने समाज का औरत की ओर देखने का जो पारंपारिक दृष्टिकोण है उसे गलत माना है और नये प्रगतिशील दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया है। नारी को सिगरेट जैसी एक मुंह-से-मुंह चुमने के लिए बाध्य करनेवाली इस समाज व्यवस्था पर कठोर आघात किया है। दमती का चित्रण व्यक्तिगत होकर भी समूची नारी जाति की व्यथा को प्रस्तुत करता है। `पाँव तले की डाल` कहानी में पुरूषों का स्त्री की ओर देखने का जो मनोरंजनात्मक दृष्टिकोण है, उस पर तीखा व्यंग्य किया है। `सभी औरते किसी-न-किसी की बहन, बेटी या स्त्री होती है। उनके साथ खिलवाड करना ठीक नहीं है।`[४]

यह संग्रह समस्या मूलक है। इसमें नारी की स्थिति, पुरूष की काम प्रवृत्ति आदि विभिन्न विषयों को अपनाया है।

११) तुमने क्यों कहा था मैं द सुंदर हूँ । (१९५४)

इस संग्रह में १३ कहानियाँ संग्रहित हैं । `कोकला उकैत` कहानी में अर्थाभाव के कारण नारी को किसप्रकार पतित बनना पडता है इसकी चर्चा है । `तीस मिन्ट` कहानी प्रेम के त्रिकोणात्मक संबंध पर आधारित है । इस कहानी के द्वारा लेखक ने नारी के प्रति पुरुष के दृष्टिकोण पर प्रहार कर नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की प्रतिस्थापना का प्रयास किया है । समाज में पुरुष का शिकार बन कर निरंतर तडपनेवाली औरत जब असहाय बनती है तो वेश्या बनने के सिवाय उसके सामने और कोई चारा नहीं रहता यह बात `आबरू` कहानी के द्वारा स्पष्ट की गयी है । यहाँ एक प्रश्न मन में अनायास आ जाता है कि, यशपाल अपनी कहानियों में नारी को वेश्या के सिवा किसी अन्य रूप में क्यों नहीं चित्रित करते ? क्या वेश्या बनना ही नारी आत्मनिर्भरता का एकमात्र विकल्प है ? `तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हूँ` एक ऐसी नारी की व्यथा है जो कामेच्छा की पूर्ति के अभाव में जीवनभर कुंठाग्रस्त बनी रहती है । कहानी में यौनप्रश्न को महत्व दिया है ।

१२) उत्तमी म की माँ (१९५५)

इस संग्रह में कुल ११ कहानियाँ संग्रहित हैं । `उत्तमी की माँ` कहानी सेक्स समस्या पर आधारित है, जिसमें लेखक ने कामवासना के दमन के दुष्परिणाम की ओर संकेत किया है । नारी का कुरूप होना समाज की दृष्टि में कितना बडा दोष होता है, तथा उसके परिणाम स्वरूप नारी क्या बन सकती है ? इसका चित्रण करना लेखक का उद्देश्य है । `पतिव्रता` कहानी की सुमति जीवनभर पतिधर्म निबाहना ही लक्ष्य मानकर जी रही है । पर उसके पति किसी वेश्या के चक्कर में पडे है और वह वेश्या पायरिया के मरिज सुमति के पति को जीवनभर साथ देना भी नहीं चाहती । इसके द्वारा

लेखक यह दिखाना चाहता है कि, एक वेश्या के लिए आत्मनिर्भरता की गुंजाईश है वह अपनी इच्छा के अनुसार साथी चुन सकती है, पर हमारे रूढ़िग्रस्त समाज में पातिव्रत्य के नाम पर विवाहित स्त्री के लिए ऐसा स्वातंत्र्य नहीं है। ` न कहने की बात ` कहानी में नारी की मातृत्व की अभिलाषा का वर्णन हुआ है। अपने पति की कमी के कारण जीजी माँ नहीं बन सकती। अत: वह अपने भाभी के मुन्ने से प्रेम करती है। परंतु उसका मन उसे हमेशा यह जताता रहता है कि यह प्रेम सुख सब कृत्रिम है। लेखक ने नारी की मनोदशा का बहुत ही स्वाभाविक वर्णन किया है। ` भगवान का खेल ` कहानी में नारी की करूण कथा चित्रित है। नृत्य आदि कला क्षेत्र में काम करनेवाली नारियों के प्रति होनेवाले सामाजिक दृष्टिकोण को प्रकट किया है। ` करवा का व्रत ` कहानी में नारी द्वारा पुरूष के हृदय परिवर्तन का वर्णन है। पुरूष के अपमानजनक व्यवहार के बावजूद भी भारतीय नारी अगले जन्म में वही पति चाहती है। लाजो ऐसी ही महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है।

इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ नारी समस्याओं से संबंधित हैं।

१३) <u>ओ भैरवी</u> (१९५८)

यशपाल का यह १३ वा कहानी संग्रह है। इसमें कुल मिलाकर १२ कहानियाँ संग्रहित हैं। ` ओ भैरवी ` कहानी में वृध्द काल के परिपार्श्व में यौन प्रश्नों की चर्चा की है। बौध्द धर्म में भिक्षु बनने के लिए नारी विमुख होना आवश्यक माना जाता था। इस तथ्य पर यह कहानी आधारित है। लौकिक नारी वासना का मूल है, अत: त्याज्य है - धर्म के इस तत्व को कहानी झूठा सिध्द करती है। ` सब की इज्जत ` कहानी पुरूष वर्ग के अहंकार का चित्रण करनेवाली और उसके समक्ष नारी को तुच्छ माननेवाली

स्वार्थी प्रवृत्ति पर प्रकाश डालती है F नारी की प्रतिष्ठा के प्रति समाज को सतर्क करना कहानी का उद्देश्य है । ` देखा सुना आदमी ` कहानी भारतीय विवाह पद्धति को स्पष्ट करती है । इन संस्कारों के कारण नारी दबी जा रही है । तारा ऐसी ही नारी है जो भारतीय विवाह पद्धति का शिकार है ।

१४) <u>सच बोलने की भूल</u> (१९६२)

यशपाल के इस चौदहवे कहानी संग्रह में कुल मिलाकर छोटी छोटी बारह कहानियाँ संग्रहित हैं । ` नारी की ना ` नारी के संकोच और ` ना ` पर पुरूषों के आसक्त होने का रहस्य सुलझानेवाली कथा है ।

१५) <u>खच्चर और आदमी</u> (१९६५)

इस संग्रह में कुल ९ कहानियाँ संग्रहित हैं । ` वैष्णवी ` बाल-विधवा समस्या का उद्घाटन करनेवाली कहानी है । समाज की पुरानी रूढ़ियाँ नारी को जीते-जी साँस लेना भी दुस्वार करती हैं, इसकी ओर लेखक ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है । ` उपदेश ` कहानी में नारी आर्थिक विपन्नता के कारण वेश्या किस तरह बनती है इसका चित्रण है । सेक्स का संतोष पुरूष के लिए मन बहलाव है तो नारी के लिए उसकी मजबूरी । ` अश्लील ` कहानी में नारी के प्रति पुरूष के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है । पुरूष के नारी के प्रति सिर्फ अश्लील दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति पर प्रहार किया है ।

१६) मूख के तीन दिन (१९६८)

यशपाल के इस सोलहवे कहानी संग्रह में कुल ग्यारह कहानियाँ संग्रहित हैं। ` सूब बचे ` कहानी में सेक्स की तृष्टि और विवाह इनके पारस्परिक संबंधों के प्रति होनेवाली रूढिग्रस्त धारणा पर प्रहार कर सेक्स के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण को प्रकट किया है। कुमार और सम्बल दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं। कुमार संबल से शरीर सुख चाहता है पर विवाह के बंधन में फंसना उसे मंजूर नहीं है। संबल भारतीय एवं कुमार पाश्चात्य दृष्टिकोण के प्रतिनिधि है। सेक्स के प्रति होनेवाले दृष्टिभेद पर ही कथा आधारित है।

१७) लैम्पशेड (१९७९)

यह यशपाल की मृत्यु के उपरांत प्रकाशित पहली रचना है। ` अपना-अपना एक्काद ` कहानी में नारी को संतान निर्मिती का मशिन माननेवाली पुरुष सत्ताक समाज व्यवस्था में वंध्या स्त्री की कोई कीमत नहीं होती - इस विदारक सत्य को उद्घाटित किया है।

निष्कर्ष :

यशपाल ने अपनी जादातर कहानियों में नारी स्वातंत्र्य, वैवाहिक रूढियाँ, वेश्या समस्या, यौन समस्या तथा आर्थिक विषमता को विस्तार के साथ चित्रित किया है। इसके लिए जिम्मेदार जो असामाजिक तत्व हैं, रूढी और परंपराएँ हैं उनका खुलकर स्पष्ट शब्दों में विरोध किया है। नारी चित्रण के प्रति लेखक की सतर्कता उसके प्रगतिशील दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। नारी के प्रति सहानुभूति होने के कारण यशपाल के नारी पात्र त्याग

सेवा, बलिदान एवं साहस जैसे गुणों को उद्घाटित करते हैं। नारी के प्रति नया एवं प्रगतिशील दृष्टिकोण देकर समाज उत्थान के कार्य में यशपाल की कहानियाँ अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

संदर्भ

१) पिंजरे की उडान - पृ. २७.

२) चित्र का शीर्षक - पृ. २६.

३) वही, पृ. २७.

४) वही, पृ.